Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षा संवर्धन में पारिवारिक वातावरण की भूमिका: शैक्षिक एवं सामाजिक नीति हेतु निहितार्थ

Ramesh Chandra
Research Scholar, Department of Education, Bhagwant University Ajmer (Rajasthan)
Dr. Pratap Singh Rana
Research Guide, Department of Education, Bhagwant Global University Kotdwar(Uttarakhand)

सारांश

किशोरावस्था एक व्यक्ति के जीवन की एक महत्वपूर्ण विकासात्मक अवधि है जब वह अपने शैक्षिक रुचियाँ, सामाजिक दृष्टिकोण, आत्म–अवधारणा और भविष्य से संबंधित अपेक्षाओं को अधिक स्पष्ट करने लगता है। किशोर इस समय विभिन्न व्यवसायों में रुचि विकसित करते हैं और भविष्य में अपनाने वाले काम या क्षेत्र के बारे में सपने बनाते हैं। किस व्यक्ति की योग्यता और रुचि केवल उसके व्यवसायिक लक्ष्यों का विकास नहीं करताय उसके परिवार, विद्यालय, सामाजिक माहौल, आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक मूल्य भी उसका प्रभाव डालते हैं। इनमें से एक किशोर के जीवन का सबसे निकट और महत्वपूर्ण सामाजिक परिवेश परिवार है।

इस अध्ययन का उद्देश्य पारिवारिक वातावरण की भूमिका का विश्लेषण करना है और इसके आधार पर शैक्षिक और सामाजिक नीति के लिए आवश्यक निहितार्थों को समझाना है. किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षाओं के संवर्धन में पारिवारिक वातावरण की भूमिका अध्ययन दोनों वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक होता है। इसके लिए किशोरावस्था, अभिभावकीय सहयोग, पारिवारिक वातावरण, करियर विकास और व्यावसायिक लक्ष्यों से संबंधित राष्ट्रीय नीतिगत दस्तावेजों और शोध–अध्ययनों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि किशोरों को अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता मिल सकती है, जिसमें सकारात्मक पारिवारिक वातावरण, अभिभावकीय प्रोत्साहन, खुला संवाद, शैक्षिक सहयोग, करियर संबंधी जानकारी और निर्णय लेने की पर्याप्त स्वतंत्रता शामिल हैं। इसके विपरीत, अत्यधिक अभिभावकीय दबाव, लैंगिक रूढ़ियाँ, कम करियर जानकारी और किशोर की रुचियों की उपेक्षा उसके लक्ष्यों को सीमित कर सकती हैं। 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और विविध करियर अवसरों को अधिक महत्व दिया है, इसलिए परिवार और विद्यालय के बीच सहयोग और अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

मुख्य शब्द: किशोरावस्था, व्यवसायिक लक्ष्यों, पारिवारिक वातावरण, अभिभावकीय सहयोग, करियर मार्गदर्शन, स्व–प्रभावकारिता, व्यावसायिक शिक्षा, शैक्षिक नीति

1. प्रस्तावना:

किशोरावस्था मानव विकास का एक प्रमुख चरण है। उस समय व्यक्ति शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से बहुत बदल जाता है। किशोर धीरे–धीरे अपनी रुचियों, क्षमताओं, रुचियों और भविष्य के लक्ष्यों के बारे में अधिक जानने लगते हैं। इसी समय यह प्रश्न महत्वपूर्ण होने लगता है कि भविष्य में क्या करना चाहिए।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

व्यक्ति के भविष्य के कार्य या व्यवसाय से संबंधित लक्ष्य या अभिलाषा को व्यावसायिक आकांक्षा कहा जा सकता है। किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षाएँ स्थायी नहीं हैं वे शिक्षा, सामाजिक संपर्क, अनुभव और अवसरों से बदल सकते हैं।

परिवार की भूमिका किशोर के करियर विकास में बहुत महत्वपूर्ण है। माता–पिता का शैक्षिक स्तर, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति, कार्य के प्रति दृष्टिकोण, बच्चों से अपेक्षाएँ और परिवार में संवाद की प्रकृति किशोर के करियर संबंधी विचारों को प्रभावित कर सकती हैं। किशोर अपने आसपास की व्यावसायिक नौकरियों को देखकर भविष्य की संभावनाओं को समझता है।

किशोरों के करियर विकास और अभिभावकीय समर्थन के संबंध में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि माता–पिता का समर्थन उनका करियर अन्वेषण, करियर योजना बनाने और उनके व्यावसायिक लक्ष्यों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। गिनेवरा, नोता और फेरारी के अध्ययन ने अभिभावकीय समर्थन और किशोरों की करियर स्व–प्रभावकारिता और करियर चुनाव के बीच संबंध की ओर संकेत किया है।

इसी तरह सावित्री, क्रीड और जिमर–जेम्बेक ने अभिभावकीय प्रभावों और किशोरों की करियर आकांक्षाओं और गतिविधियों के बीच दीर्घकालिक संबंधों को देखा। इससे स्पष्ट होता है कि परिवार का प्रभाव केवल तत्काल निर्णय तक सीमित नहीं रहता, बल्कि किशोर के करियर विकास की कई परिस्थितियों में दिखाई दे सकता है।

भारतीय समाज में परिवार की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि माता–पिता और अन्य परिवारों का प्रभाव शिक्षा और व्यवसाय संबंधी निर्णयों पर अपेक्षाकृत अधिक दिखाई देता है। अतः किशोरों की नौकरी की इच्छाएँ समझने के लिए घरेलू परिवेश का अध्ययन करना आवश्यक है।

2. अध्ययन की पृष्ठभूमि एवं समस्या:

वर्तमान समय में रोजगार और व्यवसाय का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल सेवाएँ, डेटा विज्ञान, स्वास्थ्य तकनीक, हरित प्रौद्योगिकी, डिजाइन, मीडिया, उद्यमिता और अन्य कौशल–आधारित क्षेत्रों में नए अवसर पैदा हो रहे हैं, साथ ही पारंपरिक व्यवसायों में भी।

इस बदलाव से युवा लोगों के पास अधिक करियर विकल्प हैं। यद्यपि अधिक विकल्पों के बारे में किशोरों और उनके अभिभावकों को पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए, तो यह लाभदायक है। वर्तमान में भी कई परिवार सीमित हैं और पारंपरिक व्यवसायों को ही सुरक्षित या प्रतिष्ठित मानते हैं। ऐसे हालात में, युवा लोगों को उनकी वास्तविक रुचि और क्षमता के अनुरूप करियर विकल्पों की खोज करना मुश्किल हो सकता है।

दूसरी ओर, अभिभावकों की सकारात्मक उपस्थिति किशोरों को अधिक विस्तृत विचार दे सकती है। यदि माता–पिता किशोरों को विभिन्न करियर विकल्पों पर चर्चा करते हैं, उनकी रुचि को समझते हैं और उन्हें संबंधित जानकारी प्राप्त करने का अवसर देते हैं, तो वे अधिक यथार्थवादी करियर लक्ष्य बना सकते हैं।

अभिभावकीय अपेक्षाएँ समस्या का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू हैं। माता–पिता की अपेक्षा किशोर को प्रेरित कर सकती है, लेकिन जब अपेक्षा दबाव में बदल जाती है, किशोर अपनी वास्तविक रुचि व्यक्त करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। इसलिए घर पर समर्थन और नियंत्रण के बीच संतुलन होना चाहिए।

3. अध्ययन के उद्देश्य :

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- किशोरों की व्यावसायिक इच्छा का भ्रम दूर करना
- व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में पारिवारिक परिवेश की भूमिका का विश्लेषण करना
- अभिभावकीय सहयोग और करियर मार्गदर्शन का महत्व समझाना।
- अभिभावकीय अपेक्षाओं के प्रभावों का विश्लेषण करना
- पारिवारिक वातावरण और किशोरों की करियर स्व–प्रभावकारिता के बीच का संबंध समझना
- किशोरों के व्यावसायिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए शैक्षिक और सामाजिक नीति सुझाव देना।

4. अध्ययन विधि:

यह अध्ययन वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रक्रियाओं पर आधारित है। इसमें प्राथमिक क्षेत्रीय सर्वेक्षण या काल्पनिक सांख्यिकीय आँकड़े नहीं हैं। अध्ययन में किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षा, पारिवारिक वातावरण, अभिभावकीय सहयोग, करियर विकास और व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित प्रकाशित शोध–अध्ययन और आधिकारिक नीतिगत दस्तावेजों का विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन का मुख्य आधार सामाजिक–संज्ञानात्मक करियर दृष्टिकोण, अभिभावकीय प्रभाव से संबंधित शोध और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी प्रावधान हैं।

यह अध्ययन साहित्य पर आधारित है, इसलिए इसके परिणामों को सांख्यिकीय रूप से किसी क्षेत्र या विद्यालय की पूरी किशोर आबादी पर सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता। उपलब्ध शोध–साक्ष्यों के आधार पर, इसका लक्ष्य पारिवारिक वातावरण और व्यवसायिक लक्ष्यों के बीच संबंध को समझना है।

5. किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षा की अवधारणा:

व्यावसायिक आकांक्षा व्यक्ति के भविष्य के लक्ष्य से संबंधित है, चाहे वह कोई व्यवसाय, पेशे या क्षेत्र हो। किशोरावस्था में यह इच्छा लगातार बढ़ती रहती है।

व्यवसायिक लक्ष्यों को बनाने में निम्नलिखित कारक महत्वपूर्ण हैं—

- **करियर उद्देश्य:** किशोर भविष्य में क्या करना चाहता है?
- **करियर विवरण:** किशोर अपने भविष्य के बारे में बहुत स्पष्ट है।
- **करियर विश्लेषण:** विभिन्न व्यवसायों, पाठ्यक्रमों और नौकरी के अवसरों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया
- **करियर में आत्म–प्रभावकारिता:** किसी कार्यक्षेत्र में सफल होने की किशोर की क्षमता पर विश्वास
- **करियर प्लान:** निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए कौशल विकास, शिक्षा और प्रशिक्षण की योजना।

सामाजिक–संज्ञानात्मक करियर सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति की करियर संबंधी रुचियाँ और निर्णय सामाजिक पर्यावरण और व्यक्तिगत कारकों के बीच अंतःक्रिया से बनते हैं। इस दृष्टि से परिवार किशोर के करियर विकास में महत्वपूर्ण पर्यावरणीय घटक है।

6.पारिवारिक माहौल की व्यवसायिक लक्ष्यों के विकास में भूमिका

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

परिवार में बच्चे को सामाजिक करने का पहला प्रमुख माध्यम पारिवारिक वातावरण है, जो व्यावसायिक लक्ष्यों को बढ़ाता है। किशोर का व्यक्तित्व और भविष्य की उम्मीदें परिवार में उत्पन्न होने वाले भावनात्मक वातावरण, बातचीत, स्वतंत्रता और अनुशासन से प्रभावित हो सकते हैं।

- **भावनात्मक समर्थन:**

जब माता–पिता किशोर की बात सुनते हैं और उसकी इच्छाओं को सम्मान देते हैं, तो किशोर अपने भविष्य के बारे में अधिक खुलकर बोल सकता है। इससे आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ सकती है।

- **शैक्षिक समर्थन:**

माता–पिता का शैक्षिक समर्थन किशोर की शैक्षिक उपलब्धि और आगे की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है, जिसमें पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण, अध्ययन सामग्री और पर्याप्त प्रोत्साहन शामिल हैं।

- **करियर संबंधी विवरण:**

परिवार के सदस्यों को विभिन्न व्यवसायों, पाठ्यक्रमों और प्रशिक्षण अवसरों के बारे में जानकारी मिल सकती है। यदि माता–पिता पर्याप्त जानकारी नहीं रखते हैं तो वे किशोर को विद्यालयी करियर काउंसलर या अन्य विश्वसनीय स्रोतों से जानकारी लेने को प्रेरित कर सकते हैं।

- **स्वतंत्रता और निर्णय क्षमता:**

किशोर को हर निर्णय स्वयं लेने देना ठीक नहीं हैय उसके विचारों को पूरी तरह नकार देना भी ठीक नहीं है। मार्गदर्शन और स्वतंत्रता का संतुलन करना व्यावसायिक निर्णय क्षमता को बढ़ाता है।

- **अभिभावकीय प्रेरणा:**

माता–पिता की अभिभावकीय प्रेरणा भी किशोरों पर प्रभाव डाल सकती है। यदि परिवार काम को सम्मान और जिम्मेदारी से जोड़कर देखता है, तो किशोर में भी काम और व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सकता है।

7. अभिभावकीय सहयोग, उम्मीदें और करियर मार्गदर्शन:

अभिभावकीय सहयोग किशोरों के करियर विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। सहयोग में केवल आर्थिक सहायता नहीं होती, बल्कि भावनात्मक समर्थन, जानकारी, प्रेरणा, बहस और निर्णय में भागीदारी भी होती है।

गिनेवरा, नोता और फेरारी ने अध्ययन किया कि अभिभावकीय समर्थन मिलने से किशोरों की करियर स्व–प्रभावकारिता और करियर विकल्पों में संबंध हो सकता है। इसका अर्थ यह है कि परिवार न सिर्फ किशोर को करियर के विकल्प देता है, बल्कि उन विकल्पों पर उनके विश्वास को भी प्रभावित कर सकता है।

कल्पना का प्रभाव दो प्रकार का हो सकता है। किशोर को सकारात्मक अपेक्षा मिल सकती है, जो उन्हें मेहनत करने और लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित कर सकती है। लेकिन तनाव और असंतोष हो सकता है यदि अपेक्षाएँ बहुत कठोर हों और किशोर की रुचि या क्षमता से मेल न खाती हों।

इसलिए, अभिभावकीय करियर मार्गदर्शन में इन चीजों का ध्यान रखा जाना चाहिए—

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

- किशोरों की दिलचस्पियों को समझना
- उसकी शैक्षिक क्षमता और प्रदर्शन का सही मूल्यांकन करना
- विभिन्न व्यावसायिक अवसरों की सूचना देना
- केवल प्रतिष्ठित व्यवसायों पर जोर न देना
- किशोर को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना
- असफलता को एक अवसर समझना

इस तरह, अभिभावकीय मार्गदर्शन का उद्देश्य किशोर को निर्णय लेने में मदद नहीं करना चाहिए, बल्कि उसे बेहतर निर्णय लेने में सक्षम बनाना चाहिए।

8. पारिवारिक वातावरण, स्व–प्रभावकारिता एवं करियर अन्वेषण:

किशोर की नौकरी की इच्छा में स्व–प्रभावकारिता, पारिवारिक वातावरण और करियर अन्वेषण महत्वपूर्ण हैं। स्व–प्रभावकारिता का अर्थ है कि कोई व्यक्ति सफलतापूर्वक कुछ कर सकता है।

किशोर की स्व–प्रभावकारिता मजबूत हो सकती है यदि परिवार उसकी कोशिशों को प्रोत्साहित करता है, उसकी सफलताओं को स्वीकार करता है और उसे विफलताओं के बाद सुधार का अवसर देता है।

इसी प्रक्रिया में करियर अन्वेषण भी महत्वपूर्ण है। किशोर विभिन्न व्यवसायों की जानकारी लेकर अपनी रुचियों और क्षमताओं को संभावित करियर से तुलना करता है। शोधों ने अभिभावकीय समर्थन और करियर अन्वेषण के बीच एक सकारात्मक संबंध पाया है।

सावित्री, क्रीड और जिमर–जेम्बेक के अध्ययन में अभिभावकीय प्रभावों और किशोरों की करियर आकांक्षाओं और करियर संबंधी गतिविधियों के बीच दीर्घकालिक संबंधों को देखा गया है। इसी तरह, अन्य अध्ययनों ने पारिवारिक समर्थन को करियर विकास में महत्वपूर्ण माना है।

इस संदर्भ में, किशोर को निम्नलिखित अवसर प्रदान करने चाहिए—

- विभिन्न उद्यमों की जानकारी
- रोजगार मेले और कार्यशालाएँ
- विशेषज्ञों से चर्चा करना
- व्यावसायिक संस्थाओं का दौरा करना
- कौशल विकास कार्यक्रम
- इंटर्नशिप और अनुभव से सीखने के अवसर

इस प्रकार, परिवार का समर्थन किशोर के करियर लक्ष्यों को अधिक व्यापक और यथार्थवादी बना सकता है।

10. शैक्षिक एवं सामाजिक नीति के निहितार्थ :

2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने ज्ञान को कौशल, रोजगार और व्यावसायिक क्षमता से जोड़ने पर बल दिया है। विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव बढ़ाने और इसे मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने की दिशा में नीति में महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

यहाँ किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षाओं को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित नीतिगत कार्रवाई की जरूरत है—

- **परिवार–केंद्रित करियर शिक्षा:**

करियर मार्गदर्शन कार्यक्रमों में अभिभावकों और विद्यार्थियों दोनों को शामिल किया जाना चाहिए।

- **करियर परामर्श:**

माध्यमिक शिक्षा में करियर परामर्श नियमित रूप से होना चाहिए।

- **व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार:**

कम प्रदर्शन वाले विद्यार्थियों के लिए व्यावसायिक शिक्षा को एक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करने की धारणा समाप्त होनी चाहिए।

- **ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों पर ध्यान:**

संसाधन–वंचित क्षेत्रों में रहने वाले किशोरों के लिए सामुदायिक और डिजिटल करियर मार्गदर्शन की व्यवस्था की जरूरत है।

- **लैंगिक समानता:**

लड़के और लड़कियों के बीच लैंगिक समानता के आधार पर करियर विकल्पों के निर्धारण में भेदभाव नहीं होना चाहिए। STEM, उद्यमिता, तकनीक और व्यावसायिक क्षेत्रों को समान अवसर मिलने चाहिए।

- **परिवार–विद्यालय साझेदारी:**

परिवारों और स्कूलों के बीच नियमित संवाद से किशोरों का करियर विकास अधिक प्रभावी हो सकता है।

- **डिजिटल करियर संसाधन:**

विश्वसनीय डिजिटल प्लेटफॉर्म से पाठ्यक्रम, प्रवेश, कौशल प्रशिक्षण और रोजगार संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

9. प्रमुख निष्कर्ष एवं सुझाव:

अध्ययन के आधार पर निम्न प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं—

- किशोरों की नौकरी की इच्छा परिवार बनाता है।
- करियर अन्वेषण को सकारात्मक अभिभावकीय समर्थन मिल सकता है।
- किशोर अपनी रुचियाँ और करियर लक्ष्यों को खुले पारिवारिक संवाद में व्यक्त करने में सहायता पाता है।
- जबकि अभिभावकीय अपेक्षाएँ प्रेरणा का स्रोत हो सकती हैं, वे भी दबाव पैदा कर सकती हैं।
- किशोर की पढ़ाई और नौकरी की योजना पर परिवार का शैक्षिक वातावरण प्रभाव डाल सकता है।
- व्यावसायिक आकांक्षा का विकास करने में करियर स्व–प्रभावकारिता महत्वपूर्ण है।
- सामाजिक–आर्थिक संसाधन करियर के अवसरों पर प्रभाव डाल सकते हैं।
- किशोरों की लैंगिक रूढ़ियाँ उनके करियर के विकल्पों को सीमित कर सकती हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

सुझाव:

2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी उद्देश्यों की सफलता के लिए अभिभावकों की जागरूकता अनिवार्य है।

किशोरों के करियर निर्णय लेने में परिवार सहयोगी होना चाहिए, यह सुझाव है। माता–पिता को अपने बच्चों पर अपनी निजी इच्छाएँ थोपने के बजाय उनकी रुचि, क्षमता और हालात को समझना चाहिए। विद्यालयों में करियर परामर्श केंद्र होने चाहिए और अभिभावकों को भी करियर के बारे में जानकारी देने के कार्यक्रम होने चाहिए।

ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के किशोरों को करियर संबंधी सटीक जानकारी देने के लिए सामुदायिक और डिजिटल संसाधनों का विस्तार किया जाना चाहिए। लड़के और लड़कियों को समान करियर अवसर भी मिलने चाहिए।

व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास की जरूरत है ताकि किशोर अपनी रुचि, क्षमता और भविष्य की संभावनाओं के आधार पर करियर चुन सकें, न कि सामाजिक प्रतिष्ठा।

10. निष्कर्ष :

किशोरों का व्यावसायिक लक्ष्य उनके शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन की दिशा निर्धारित करता है। व्यक्तिगत रुचि और क्षमता ही इसका विकास नहीं करतेय परिवार और सामान्य सामाजिक परिवेश भी इसका विकास प्रभावित करते हैं।

किशोर को परिवार से शैक्षिक समर्थन, भावनात्मक सुरक्षा, करियर संबंधी जानकारी और निर्णय लेने के अवसर मिलने से उसके व्यवसायिक लक्ष्यों को सकारात्मक दिशा मिल सकती है। विशेष रूप से, सकारात्मक बातचीत और अभिभावकीय समर्थन किशोरों को उनके अपने करियर और करियर की खोज में मदद कर सकते हैं।

इसके विपरीत, अत्यधिक अभिभावकीय नियंत्रण, अवास्तविक अपेक्षाएँ, लैंगिक पूर्वाग्रह और कम करियर जानकारी किशोरों की आकांक्षाओं को बाधित कर सकते हैं। परिवार की भूमिका इसलिए निर्देशात्मक नहीं बल्कि सहयोगात्मक होनी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में, कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को स्कूलों में शामिल करना एक महत्वपूर्ण कदम है। इसकी सफलता के लिए परिवारों को बदलते करियर के बारे में भी पता होना चाहिए।

इसलिए परिवार, विद्यालय और समाज के बीच सहयोगात्मक तंत्र बनाए जाना चाहिए, जो किशोरों की व्यावसायिक इच्छा को पूरा करेंगे। ऐसे वातावरण में किशोरों को अपनी रुचि और क्षमता का पता लगाने, विभिन्न करियर विकल्पों का अध्ययन करने और यथार्थवादी और आत्मविश्वासपूर्ण व्यावसायिक लक्ष्यों का निर्धारण करने में सहायता मिलेगी। इस तरह, पारिवारिक वातावरण केवल आपके करियर चुनाव को प्रभावित नहीं करता, बल्कि सामाजिक–आर्थिक विकास और मानव–संसाधन गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी). करियर मार्गदर्शिका एवं करियर कार्ड. नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
3. गिनेवरा, एम. सी., नोता, एल. एवं फेरारी, एल. (2015). किशोरों के करियर विकास में अभिभावकीय सहयोग: माता–पिता एवं बच्चों के दृष्टिकोण. द करियर डेवलपमेंट क्वार्टरली, 63(1).
4. सावित्री, डी. आर., क्रीड, पी. ए. एवं जिमर–जेम्बेक, एम. जे. (2015). सामूहिकतावादी समाज में अभिभावकीय प्रभाव एवं किशोरों की व्यावसायिक आकांक्षाओं तथा गतिविधियों का दीर्घकालिक अध्ययन. जर्नल ऑफ रिसर्च ऑन एडोलसेंस।
5. हिल, एन. ई., कैस्टेलिनो, डी. आर., लैंसफोर्ड, जे. ई. एवं अन्य (2004). अभिभावकीय शैक्षिक सहभागिता तथा विद्यालयी व्यवहार, उपलब्धि एवं आकांक्षाएँ: किशोरावस्था में जनसांख्यिकीय विविधताएँ. चाइल्ड डेवलपमेंट, 75(5).
6. हाग्रीव, बी. के., इनमैन, ए. जी. एवं क्रेन, आर. एल. (2005). पारिवारिक अंतःक्रिया प्रतिरूप, करियर नियोजन अभिवृत्ति एवं उच्च विद्यालयी किशोरों की व्यावसायिक पहचान. जर्नल ऑफ करियर डेवलपमेंट, 31(4).
7. बंडूरा, ए. (1986). विचार एवं क्रिया की सामाजिक आधारशिला: सामाजिक–संज्ञानात्मक सिद्धांत. न्यू जर्सी प्रेंटिस–हॉल।
8. लेंट, आर. डब्ल्यू., ब्राउन, एस. डी. एवं हैकेट, जी. (2000). करियर चयन के संदर्भगत समर्थन एवं बाधाएँ: सामाजिक–संज्ञानात्मक विश्लेषण. करियर चॉइस एंड डेवलपमेंट. सैन फ्रांसिस्कोरू जोसी–बास।
9. सविकास, एम. एल. (2013). करियर निर्माण सिद्धांत एवं व्यवहार. करियर डेवलपमेंट एंड काउंसलिंग. होबोकेन: विली।
10. विश्व स्वास्थ्य संगठन (2007). किशोर, सामाजिक समर्थन एवं सहायता प्राप्त करने का व्यवहार. जिनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन।
11. विश्व स्वास्थ्य संगठन. किशोर कल्याण को बढ़ावा देना. जिनेवा: विश्व स्वास्थ्य संगठन।
12. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास संबंधी नीतिगत प्रावधान. नई दिल्ली: भारत सरकार।